ओम् शान्ति 23-3-21 मधुबन

आदरणीय दादी गुल्जार जी 11 मार्च 2021 को अपने भौतिक शरीर को छोड़ अव्यक्त-वतन-वासी बनी, 13 मार्च को शान्तिवन में शक्ति भवन के सामने बगीचे में उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया। संस्कार के पश्चात 12 वें दिन तक उनके निमित्त विशेष भोग तथा योग के कार्यक्रम चलते रहे। उनके प्रति विभिन्न सन्देशियों के माध्यम से जो अव्यक्त वतन से दिव्य सन्देश प्राप्त हुए हैं, वह संकलन यहाँ प्रस्तुत है:-

13-3-21 - शशी बहन

आज आप सबकी अति स्नेह भरी यादप्यार लेकर जैसे मैं वतन में पहुंची। वतन में आज अनेक प्रकार की हीरे मोतियों की डायमण्ड मालाओं से बहुत सुन्दर सजावट दिखाई दे रही थी। बाबा दूर से एक बहुत सुन्दर पुष्पक विमान की तरह सजे हुए रथ में आते हुए दिखाई दिये, उसमें बाबा और दादी दोनों थे, लेकिन उन्हें देखते ऐसे लगा जैसे दादी बाबा के रूप में और बाबा दादी के रूप में.. एक सेकण्ड बाबा, एक सेकेण्ड दादी। पहचाना भी नहीं जा रहा था कि यह दादी है या बाबा है। मैंने कहा बाबा आज तो दादी का रूप अलग ही दिखाई दे रहा है। तो बाबा ने कहा रथ का इतना महत्व होता है, बाप ने इस रथ को अच्छी प्लैनिंग से सम्पन्न बनाकर इस स्वरूप में भक्तों के सामने प्रत्यक्ष किया है। फिर मैंने कहा दादी आप तो ऐसे ही वतन में चली आई। तो दादी ने कहा बाबा मुझे रोज़ कहाँ ना कहाँ का सैर कराते थे। मैंने कहा आप कहाँ-कहाँ जाते थे? तो मुस्कराते कहती है बाबा से पूछो। बाबा ने कहा इस बच्ची का शुरू से ऐसा पार्ट रहा है जो अनेक प्रकार के ट्रान्स मैसेज लेकर आती थी, जिससे यज्ञ के अनेक विशेष कार्य चलते रहे। लेकिन कुछ समय से बाबा बच्ची को भिन्न-भिन्न स्थानों पर ले जाकर कभी साइंटिस्ट की सेवा, कभी विश्व परिवर्तन करने वाले महान लीडर्स को सन्देश देकर विशेष प्रेरणा करती रही। फिर मैंने कहा दादी आपका शरीर क्या करता था! तो दादी ने कहा कि शरीर तो अपना काम करता था, बाबा अपना काम कराता था। तो बाबा ने कहा शुरू से ही इस बच्ची का न्यारे और प्यारेपन का, निसंकल्प रहने का पार्ट रहा है। डॉक्टर शरीर की अच्छी तरह से सम्भाल कर रहे थे। उन्हें भी बहुत अच्छे अनुभव होते थे। कईयों को दादी का शरीर टच करने से भी शक्ति और वरदान की अनुभूति होती थी। फिर मैंने कहा दादी आज के दिन सभी आपको बहुत याद दे रहे हैं। तो दादी ने कहा मेरी भी सबको याद देना। इतने में क्या देखती हूँ - सामने बहुत सारे कार्ड थे, हर कार्ड पर कुछ न कुछ लिखा हुआ था। कोई दादी को थैंक्स लिख रहा था, कोई उल्हनें भी दे रहा था। दादी आपने हमें बाबा से मिलाया, कितने वरदान दिये, साकार बाबा का अनुभव कराया। तो जैसे दादी उन कार्ड्स को देखने लगी। तो वह कार्ड का जैसे पहाड़ दिखाई दे रहा था, वह पूरा पहाड़ एक छोटी सी लाइट के रूप में परिवर्तन हो गया। उस लाइट से भी सबको शक्ति मिल रही थी। तो दादी कहती है यह जो अनुभव मिले हैं, शक्ति मिली है उसके लिए थैंक्स देने की बात नहीं है, बाबा कहते हैं बच्चे, अब इतने शक्ति सम्पन्न बनो जो दूसरों को भी सम्पन्न स्वरूप अनुभव कराओ।

फिर मैंने कहा बाबा आपने इस रथ द्वारा हम सबको इतने अनुभव तो कराये हैं, अब आगे क्या है? तो बाबा ने कहा, अब बच्चों को अपने आपको स्वयं प्रपेयर (तैयार) करना है। जो कुछ मिला है, उसकी प्रैक्टिस करके हर बच्चे को परफेक्शन (सम्पूर्णता) की ओर जाना है। जैसे बच्ची हर चीज़ में परफेक्ट थी, ऐसे सभी बच्चों को भी खुद को सम्पन्न बनाकर नई दुनिया बनाना है। फिर बाबा ने सभी बच्चों को वतन में इमर्ज किया। बीच में बाबा और दादी थे। कभी दादी बाबा के हार्ट में दिखाई देती। कभी बाबा की बाहों में समाई हुई दिखाई दे रही थी। बाबा सभी को दृष्टि दे रहे थे, दृष्टि द्वारा हरेक के पास कोई न कोई वरदान पहुंच रहा था। दादी बहुत न्यारी प्यारी और लाइट रूप में दिखाई दे रही थी। बाबा ने कहा बाप ने बच्ची को शुरू से ही दिल में समाया है, बच्ची द्वारा विशेष कार्य कराये

हैं। अभी भी नई दुनिया के लिए बच्चों को सम्पन्न बनाने के लिए, एडवान्स पार्टी के लिए बच्ची से सेवा करायेंगे।

फिर मैंने कहा बाबा आज दादी के लिए भोग लेकर आई हूँ। बाबा ने भोग खोला और दादी को खिलाने लगे तो दादी ने कहा आज सबको वतन में बुलाकर भोग खिलाना है। फिर दादी ने अपने हाथ से भोग उठाकर बाबा के हाथ में दिया। तो जैसे बाबा के हाथ से सभी के मुख में पहुंचता गया और हर एक को कोई न कोई वरदान भी मिलता गया। फिर मैंने कहा दादी आपको सबके लिए कुछ कहना है। तो कहती है, बाबा इन सबको ऐसा एक तख्त दो जिस पर यह सब बैठे रहें। तो सामने तख्त इमर्ज हुआ। उसके चारों कोनों पर शब्द लिखे थे:- 1- मर्सीफुल, 2- शुभ भावना, 3-विश्व कल्याणकारी और 4- वरदानी। तो दादी कहती है अभी समय अनुसार हर एक को स्वयं प्रति भी मर्सीफुल बनना है। खासकर ब्राह्मणों प्रति जो कोई संकल्प आते हैं उन्हें मर्सीफुल बन स्वाहा करें। भक्तों पर और दूसरों पर तो मर्सी करना ही है, इससे खुद के अनुभव भी बढ़ेंगे और दुआयें भी मिलेंगी, समय अनुसार अभी इसकी जरूरत है।

फिर सभी दादियों की याद के साथ नीलू बहन और सेवा साथियों की याद दी। तो बाबा ने सबको वतन में इमर्ज किया। नीलू बहन और सभी सेवासाथियों को बाबा दृष्टि देते हुए बोले, कि देखो नीलू बच्ची ने कितना अथक होकर सेवा की है। बाबा ने हाथ पकड़कर झूला झुलाया और कहा बच्ची ने लगन से प्यार से साथियों को साथ लेकर सेवा का पार्ट बजाया है। इस पार्ट में अनेकों का भाग्य भी खुला है, अनुभव भी प्राप्त हुए हैं। इस रथ को प्यार से सम्भाला है, बाप तो साथ था ही। रथ की सम्भाल करना, वरदानों को प्राप्त करना, यह भी भाग्य को बढ़ाना है। बच्ची का भाग्य भी बहुत सुन्दर है।

फिर बाबा ने डॉक्टर्स को इमर्ज किया और कहा इनको जो निमित्त सेवा मिली वो सेवा नहीं जीवन में अनेक अलौकिक शक्तियों की अनुभूति की। इसके द्वारा अपने अन्दर और गहरे अनुभव प्राप्त करने हैं। फिर दादी ने देश विदेश के भाई बहिनों को, खास दिल्ली के सभी स्थानों के भाई बहिनों को याद दिया। बाबा ने कहा, यह विश्व की दादी है, सबकी स्नेही रही है, सबका यादप्यार पहुंचा है। बाबा ने भी सबको यादप्यार दिया। फिर बाबा ने कहा बच्ची, अभी बाबा के साथ ही है। बाप ने बच्ची से विशेष कार्य कराये हैं और कराते रहेंगे। ऐसे सबकी याद प्यार लेते मैं नीचे आ गई।

14-3-21 रुकमणी बहन

बाबा के करीब पहुंचते ही देखा कि बाबा के बाजू में दादी बैठी है। एक सेकेण्ड दादी की तरफ देखकर मैंने दादी जी से पूछा कि दादी आज वतन में बाबा के एकदम करीब बैठी हो, तो दादी एक सेकेण्ड चुप रहकर कहती है कि मैं तो जब शरीर में थी, तब भी बाबा के करीब ही बैठती थी। मैं उस समय भी बाबा से अलग नहीं थी। अभी वतन में भी बाबा के साथ ही और करीब ही बैठी हूँ। मैंने दादी को कहा आपको तो पूरा ब्राह्मण परिवार, सभी बाबा के बच्चे बहुत-बहुत याद कर रहे हैं, तो दादी बड़ी मीठी दृष्टि देते मुस्कराते हुए कहती है कि सभी बाबा के बच्चे हैं, मैं भी बाबा का बच्चा बन के रही, अभी बाबा ने वतन में बिठाया है, तो अभी और कुछ बाबा को सेवा लेनी होगी इसलिए सभी ब्राह्मण बच्चे बेहद परिवार उसी नज़र से उसी दृष्टि से मुझे देख रहे हैं। मैं भी ब्राह्मण परिवार को उसी नज़र से देख रही हूँ।

फिर बाबा कहने लगे, बच्ची का तो बचपन से ही श्रेष्ठ भाग्य रहा। बच्ची बाबा की बाहों में पली हुई है। बाबा दादी की तरफ देखकर कहते हैं, बच्ची के प्रति एक-एक ब्राह्मण बच्चा जितनी भी बातें कहे उतनी कम हैं। मैंने कहा दादी, आप तो एकदम से चले गये। सारा ब्राह्मण परिवार सूना-सूना अनुभव कर रहा है। तो दादी कहने लगी, दादी कहीं गई नहीं है। दादी तो ब्राह्मण परिवार के और बाबा के साथ ही है। तो बाबा ने कहा दादी की पालना, वो सकाश अभी भी अनुभव कराते रहेंगे। इस प्रकार बाबा और दादी दोनों बीच-बीच में बोल रहे थे।

फिर मैंने कहा दादी विशेष आपके लिए सभी की याद और भोग लेकर पहुंची हूँ। बाबा कहने लगे जाओ बच्ची सभी से मिलकर आओ। तो दादी कहती है नहीं बाबा आप चक्कर लगाकर आओ। बाबा एक सेकेण्ड के लिए वतन से दूर हो जाते हैं। मैं देखती हूँ कि बाबा कहां चले गये, दादी को छोड़कर। तो बाबा ने कहा सभी बच्चों को सन्तुष्ट करने के लिए बाबा बच्चों के पास पहुंच जाता है। वतन में जैसे दिन का समय होता है धूप और बादल जैसा। जैसे बादलों के बीच में बाबा और दादी बैठे हुए हैं। फिर बाबा ने दादी को हरेक चीज़ (जो भोग में लेकर गई थी) उसे बड़े प्यार से स्वीकार कराया। बाबा ने कहा बच्ची ने बहुत समय से इतना मुख का स्वाद नहीं लिया। अभी बाबा बच्ची को इमर्ज कर 11-12 दिन विशेष अपने स्थान का बाबा के घर का जो भोग आयेगा, बाबा उसे जरूर स्वीकार करायेगा। बाबा कहते हैं मुख खोलो, तो जैसे बाबा दादी के तन में आते थे तो भोग खिलाते थे, वैसे ही बाबा दादी को भोग खिला रहे थे।

फिर तो सभी भाई-बहनों को बाबा की विशेष याद दी। मैंने दादी को कहा दादी किसी के प्रति आपको कुछ कहना है। तो दादी तो सदा शान्त रहती हैं, वैसे ही अन्तर्मुखी होकर कहती है जिन्होंने भी मेरी सेवा की है, मेरे साथ अंग-संग रहे हैं, सभी सेवा साथियों को दिल की याद देना। सभी ने मेरी अथक होकर सेवा की है उसका एवजा रिटर्न करुंगी। ऐसे बाबा और दादी ने सभी भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद दी और मैं यादप्यार लेते हुए नीचे आ गई।

15-3-21 रूकमणी बहन

आज बाबा के पास सभी भाई-बहनों की याद और भोग लेकर पहुंची। बहुत ही दिल की याद, दिल का स्नेह बाबा को दिया। बाबा के साथ में दादी जी बैठी थी, दादी का आज विशेष साकार में जिस प्रकार रूहानी चेहरा नज़र आता था, उसी प्रकार आज वतन में दिखाई दे रहा था। दादी ने कहा सभी की याद लेकरके पहुंची हो। मैंने कहा जी दादी और भोग भी लेकर आई हूँ। फिर बाबा ने कहा इस बच्ची को सभी बाबा वाली दादी कहते हैं। आज बाबा ने दो दृष्य दिखाये। लौकिक दुनिया में, लौकिक परिवार की रीति से बाबा और दादी दोनों एक साथ रहते हैं। यहाँ बाबा माना दोनों कम्बाइण्ड, बापदादा। दादी तो विश्व में सभी की दादी थी इसलिए सारे विश्व के बच्चे, इस बच्ची को विशेष बाबा वाली दादी कहते हैं। बच्ची ने बाबा को अपना रथ दिया और रथ देने के कारण इतना साल बच्ची ने निभाया। हर समय हर घड़ी यह स्मृति बच्ची के दिल में बापदादा के प्रति बनी हुई थी। इस बच्ची ने दोनों ही पार्ट बहुत अच्छी तरह से निभाया है।

फिर बाबा ने दिखाया जैसे रथ अलग होता है, उसे चलाने वाला और बैठने वाला अलग होता है। इस प्रकार बच्ची ने पहले अपना रथ दिया और उसमें बाबा को बिठाया, बाबा ने भी उसी प्रकार से बच्ची से हर प्रकार की सेवा ली। अब बापदादा इस बच्ची को अपना स्थान देंगे, विशेष बापदादा बच्ची को चलाने के निमित्त बनेंगे। अभी तक बच्ची ही चलती रही। अभी बापदादा बच्ची को अपना साथ और हाथ देकर चलाते रहेंगे। यह राज़ बाबा ने सुनाया।

फिर बाबा के सामने भोग रखा, दादी ने बहुत प्यार से भोग की थाली को देखा। जैसे यहाँ दादी भोग की थाली निहारती थी। सजी थाली देखकर दादी कहती है, अच्छा मेरे प्रति आया है। बाबा ने कहा, बच्ची पहले आपको बाबा भोग खिलायेगा, पीछे आप भले बाबा को स्वीकार कराना। तो बाबा बड़े प्यार से भोग खोलते जा रहे थे, दादी देख रही थी, दादी को बाबा ने कहा मुख खोलो, बाबा ने बड़े प्यार से एक-एक गिट्टी को स्वीकार कराया।

हमने कहा सभी की सूक्ष्म याद लेकर आई हूँ, तो बाबा ने कहा अभी तो बाबा और बच्ची सूक्ष्मवतन में बैठे हैं। अभी बाबा बच्ची को कहाँ-कहाँ सेवा के लिए ले जायेंगे, यह तो बाबा जाने और दादी जाने। ऐसे कहते बाबा ने नीलू बहन को और सभी को यादप्यार दिया, यादप्यार लेते मैं नीचे आ गई।

16-3-21 शशी बहन

आज सबकी याद और भोग लेकर जैसे मैं वतन में पहुंचती हूँ, तो क्या देखती हूँ, कि ऊपर से काफी सारे स्टार्स चमक रहे हैं, उनकी लाइट से सारा वतन जगमगा रहा है। उस लाइट के वायब्रेशन प्यार और शक्ति से भरे हुए अनुभव कर रहे थे, कुछ सेकेण्ड के बाद देखती हूँ बाबा और दादी सामने से आ रहे हैं और जैसे वे नजदीक आये तो बाबा मुस्कराये और दादी का स्वरूप बहुत शान्त स्वरूप मुस्कराहट से भरा हुआ इष्ट देवी के रूप में दिखाई दे रहा था। मैंने पूछा बाबा आप कहा गये थे! तो बाबा ने कहा यहाँ ना दिन है ना रात है, बच्ची पूरा समय पूरे विश्व के भक्तों के स्नेह की भावनायें और ब्राह्मणों के उल्हानें, उनका रिटर्न देने और मनोकानायें पूर्ण करने में लगी रहती है। दादी जैसे नजदीक आई, तो उन स्टार्स से बहुत सुन्दर लाइट निकलती थी और दादी के गले में बहुत सुन्दर-सुन्दर मालायें पड़ती जाती थी। दादी जैसे देवी हो, सभी उनकी एक झलक पाने के लिए बहुत सारे लोग खड़े हों।

मैंने कहा बाबा आज तो सबने बहुत याद दी है, उनके मन में भावना है कि दादी उनके सामने आये। तो बाबा के हाथ में मोतियों की एक माला थी। बाबा ने सबको इमर्ज किया, दादी ने बाबा के हाथ से मोतियों की माला ले ली और सभी भाई-बहनों के गले में इकट्ठे ही माला पहना दी। बाबा ने कहा बाबा को यही अच्छा लगता है कि सबके सब स्नेह के प्यार के सूत्र में बंधे रहें। एक दूसरे की विशेषताओं को देखकर एक दूसरे के समीप यूनिटी में रहें।

फिर मैने कहा आज दादी के लिए ब्रहमाभोजन लाई हूँ! तो बाबा ने कहा अच्छा खोलो। खोला तो देखा वहाँ जैसे ब्राह्मणों को ब्रह्माभोजन करना हो, उसके लिए ढेर सारी प्लेट्स थीं। बाबा ने कहा देखो कितने लोगों को दादी ने वरदान दिये, कितनों को बाप के समीप लायी है, कितनों को गहरे अनुभव कराये हैं। सभी अपने मन की भावनायें प्रकट करने के लिए जैसे भक्ति में अलग-अलग प्रकार की डिसेज बनाते हैं, वैसे बच्चों ने भी सूक्ष्म संकल्पों की भावनायें भेजी हैं। फिर देखती हूँ हर थाली के अन्दर भोजन के बजाए कुछ डायमण्ड दिखाई दे रहे थे। उन डायमण्ड के बीच कोई न कोई विशेषता और वरदान था, वो वरदान बच्चों के पास पहुंच रहे थे। बाबा ने कहा कोई भी बच्ची के सामने आया, चाहे पास चाहे दूर से मिला, बच्ची ने हरेक को अनेक वरदानों से भरपूर किया है। तो आज भी बच्ची हरेक को वरदान दे रही है।

फिर तो भोग खोला, बाबा ने भोग देखा और दादी को खिलाने लगे। दादी कहती है सारे लाडलों को बुलाओ। तो बाबा ने सभी को वतन में इमर्ज किया। तो दादी कहती है कि कैसे सभी भावना में खोये हुए हैं। यह भावना ऐसे लगती है कि जैसे सब बाबा के गले में पिरोये हुए हैं। फिर दादी कहती है कि बाबा आप इन सबको अपने हाथ से खिलाओ। तो बाबा ने कहा नहीं बच्ची आप खिलाओ, दादी कहती है आप मेरे साथ है, हम दोनों खिलायेंगे। तो वो प्लेट सभी के सामने पहुंचती है, उस प्लेट से बहुत अच्छी खुशबू आती है, उस खुशबू से सब अपने को भरपूर अनुभव कर रहे थे।

फिर मैंने कहा सब याद कर रहे हैं, दादी ने कहा सबकी याद पहुंचती है, बाबा साथ है जब भी मिलना हो, तो बाबा के पास वतन में पहुंचो। फिर कहती है जैसे बाप और दादा स्नेह और शक्ति के स्वरूप हैं, इसी का अनुभव सभी करते रहें और औरों को भी कराते रहें। फिर बाबा ने दादी ने सबको बहुत याद दी और मैं यहाँ पहुंच गई।

17-3-21 - रुकमणी बहन

बडे स्नेह के साथ सबकी याद लेकर जैसे वतन में पहुंची तो जाते ही देखती हूँ बाबा और दादी भोग के इन्तजार में बैठे थे। देखते ही हमको बाबा कहने लगे बच्ची भोग लेकर पहुंच गई। मैंने कहा जी बाबा। सभी की यादप्यार लेकर आई हूँ। बाबा मुस्कराकर कहने लगे, बच्ची तो सारे ब्राह्मण परिवार की दिलरुबा है। कोई ऐसा ब्राह्मण बच्चा नहीं होगा जो बच्ची को दिल से याद नहीं कर रहा हो। सभी ब्राह्मण परिवार के दिल का प्यार बच्ची

तक पहुंच रहा है। और बच्ची भी मन ही मन सभी का इतना स्नेह प्यार समा रही है। सभी का स्नेह प्यार बच्ची को मिल रहा है, इसलिए बाबा कह रहे हैं, बच्ची दिलरुबा बच्ची है। दिल की दुआयें इतनी इकट्ठी की है, इतना समय ब्राह्मण परिवार, दिल्ली परिवार की दुआयें इकट्ठी की है। दादी भी मन ही मन अन्दर से खुश हो रही थी। बाबा कहने लगे, अभी तो बच्ची ने साकार में रहकर इतनी सेवायें की हुई है। अभी सूक्ष्म रीति से फरिश्ते रूप से और भी विशेष सेवा करने के निमित्त बनी है। दादी को देखकर कई ब्राह्मण बच्चों के कई संकल्प उठ रहे हैं। बच्ची तो एकदम निंसंकल्प है। बच्ची को बाबा जहाँ बिठायेगा, उड़ायेगा, दादी चलने वाली है। इतनी निंसंकल्प और निश्चिन्त अवस्था बच्ची की रही है, इसलिए भगवान ने भी इस रथ को चुना, और विश्व की सेवा कराई। अभी भी सूक्ष्म शरीर के द्वारा अनेक सेवायें कराना बाकी है। वह सेवा कराने के निमित्त विशेष इस संगम के समय बच्ची का विशेष योगदान है, यह बच्ची की महानता है।

बाबा दादी की तरफ देखकर सुना रहे थे, दादी मन ही मन अन्दर मुस्करा रही थी। दादी कहती है बाबा आप ही सबकुछ कराने वाले हैं। हम बच्चे तो निमित्त हैं। बाबा ने कहा बच्चे निमित्त नहीं बनते तो बाबा क्या करता! ऐसे ही बाबा और दादी के बीच कुछ वार्तालाप चल रहा था, बाबा ने स्पष्ट नहीं किया।

फिर बाबा ने कहा बच्ची भोग लेकर आई हो। तो बाबा पहले बच्ची को भोग स्वीकार कराते हैं क्योंकि बच्ची ने काफी दिनों से कुछ खाया नहीं है इसलिए बाबा इतने दिनों में बच्ची को भरपूर कर देगा, जो कोई प्रकार की कमी महसूस नहीं होगी। फिर बाबा ने भोग की थाली में एक-एक चीज़ को निहारते हुए बड़े प्यार से दादी को भोग स्वीकार कराया। फिर दादी ने भी बाबा को भोग खिलाया। फिर बाबा और दादी ने कहा कि सभी स्नेही बच्चों को, बाबा की स्नेह भरी याद देना और विशेष नीलू बहन और तारा बहन को इमर्ज किया। सभी को स्नेह भरी दिल की याद दी। बाबा ने कहा दिल की याद और दिल का प्यार सभी का बाबा और दादी तक पहुंच रहा है। ऐसे कहते यादप्यार लेते हुए नीचे पहुंच गई। ओम शान्ति।

18-3-21 - रुकमणी बहन

बाबा के पास वतन में भोग लेकर जैसे ही पहुंची तो बाबा पूछते हैं बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा बच्चों के प्रति समाचार तो आप हमें बतायेंगे। बाबा कहने लगे, बाबा यह देख रहे हैं कि ब्राह्मण बच्चों का कितना प्यार दादी से है। इस समय जो भी बैठे हैं उनके बुद्धि का खिंचाव बाबा से जास्ती दादी तरफ है। अभी ब्राह्मण परिवार का केन्द्र-बिन्दु बच्ची बनी हुई है। बाबा देख रहा है कि एक तरफ जानकी बच्ची के स्मृति दिवस प्रति तैयारी चल रही है। दूसरी तरफ गुल्जार बच्ची का भी स्मृति दिवस मना रहे हैं। बाबा ने कहा संगमयुग पर बाबा के साथ-साथ दादियों का भी यादगार स्मृति स्थान बन रहा है। यही भक्ति में समर्थी दिलाने वाला श्रेष्ठ यादगार रूप चला आता है।

आज बाबा के साथ दादी ने विशेष बड़ी दादी को और जानकी दादी को याद किया। तो बाबा ने दोनों दादियों को इमर्ज किया, ऐसे तीनों दादियां वतन में इकट्ठी हो गई। सभी बहुत स्नेह प्यार से आपस में मिल रही थी। जैसे अपनों को देखकर खुशी होती है, वैसे खुशी में झूम रही थी। बाबा ने कहा देखो, आज त्रिमूर्ति दादियों का भी स्नेह मिलन हो गया है। यादगार तो है ही और बन रहा है। भक्ति में बच्चों का यादगार तो चलता आया है। जानकी दादी जी हमेशा कहती थी कि हम दिलवाला मन्दिर में तपस्या कर रहे हैं। बाबा ने कहा संगम पर तो सभी बच्चे तपस्या करते हैं। पर इन बच्चियों को संगम पर ब्राह्मण परिवार का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। समय अनुसार प्रत्यक्षता तो होनी ही है, वो तो बाबा करायेगा ही क्योंकि दादियों ने इतनी सेवायें की है, अनेक आत्माओं का भाग्य बनाया है। आज अनेक दादियों को, चन्द्रमणी दादी, परदादी को भी बाबा ने वतन में इमर्ज किया। बाबा इष्ट और अष्ट रत्नों को विशेष याद करते हैं। वतन में भी इसी रीति से इन दादियों को बाबा इमर्ज करते हैं क्योंकि ब्राह्मण बच्चों का संकल्प बहुत तेजी से चल रहे हैं। पर बाबा ने कहा समय के अनुसार बाबा सबकुछ बच्चों के आगे स्पष्ट करेंगे।

बाबा और दादियों के आगे भोग की थाली रखी थी, दादियां अन्दर ही अन्दर बहुत खुश हो रही थी, और कह रही थी कि नीचे से हम सभी के लिए इतना भोग और सभी की याद आती है। सूक्ष्म में सभी की वह याद पहुंच रही है। बाबा ने बहुत स्नेह से, एक-एक थाली खोलकर दादियों को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा साकार में तो दादियों ने बाबा के साथ अंग संग रहकर बहुत खेला खाया है, पर अभी बाबा इन दादियों को वतन में इमर्ज कर हर प्रकार से भरपूर कर रहे हैं। ऐसे कहते बाबा ने और दादियों ने सभी ब्राह्मण परिवार के बच्चों को याद दी। बाबा का और दादियों का स्नेह, यादप्यार लेते हुए, भोग स्वीकार कराते हुए मैं नीचे पहुंच गई। ओम् शान्ति।

19-03-2021 – सुरेन्द्र बहन, बनारस

आज मैं अपने सभी भाई-बहनों का विशेष नीलू बहन, सभी सीनियर भाई-बहनों का याद प्यार और भोग लेकर वतन में पहुंची तो बहुत ही सुन्दर और शक्तिशाली नज़ारा देखा। बाबा के दोनों ही रथों द्वारा शक्तिशाली स्वरूप में चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैल रहा था। दोनों के मस्तक और नयनों से पावरफुल और शीतल किरणें निकल रही थी। वह किरणें सारे ब्राह्मण परिवार और विश्व की आत्माओं तक पहुंच रही थी। बाबा ने कहा आओ बच्ची, बाबा ने दादी को भी बोला बच्ची, देखो आपका ब्रह्माभोजन आ गया है।

मुझे आज यह सौभाग्य मिला कि मैं दोनों रथों के बीच में, शिवबाबा के बीच में त्रिमूर्ति शक्ति के स्रोत में पहुंची। तो बाबा मुझे भी देखकर बहुत-बहुत शक्तियां दे रहे थे। कहा, देखें आज क्या भोग लाई हो। मैंने कहा बच्चों ने बहुत-बहुत स्नेह से तैयार करके भोग भेजा है। तो बाबा ने दादी को कहा बच्ची देखो, इस भोग में प्रेम झलक रहा है, आप स्वीकार करो। दादी ने कहा बाबा पहले आप स्वीकार कीजिए। बाबा ने भोग स्वीकार किया फिर बाबा ने दादी को भी बड़े प्रेम से खिलाया और दादी ने बाबा को खिलाया। यह भी सीन बहुत ही न्यारा और प्यारा था। दादियां यहाँ साकार में भी ब्रह्मा बाबा को भोजन स्वीकार कराती थी। ऐसे ही आज बाबा और दादी एक दूसरे को खिला रहे थे। मैं सामने बैठके देख रही थी। बाबा ने भोग स्वीकार किया और कराया, मुझे भी सौभाग्य मिला, बाबा जैसे मुख में गिट्टी खिलाते थे, वैसे मुझे भी खिलाया। फिर दादी को भी कहा कि आप भी खिलाओ। तो दोनों से मुझे भोग मिला।

फिर बाबा ने कहा शान्तिवन में क्या हो रहा है? मैंने कहा सभी आपको और दादी को बहुत स्नेह से याद करते हैं, उसी स्नेह की लहरों में डूबे हुए हैं। याद करते हुए आपसे शक्तियों का खजाना भर रहे हैं। बाबा ने कहा अभी मेरे पास बच्ची भी पहुंच गई है, जिसको एक सेकेण्ड में बाबा के पास वतन में आने का पहले से वरदान है। अभी तो बाबा के पास ही बैठी है। हम दोनों की यही इच्छा है कि हमारे कुल भूषण ब्राह्मण बच्चे, ऐसा अपना अभ्यास एकाग्रचित्त होकर करें जो सर्व तरफ से बुद्धियोग हट जाए। सभी व्यर्थ से मुक्त होकर समर्थ संकल्पों में, एक बाबा की याद में निरन्तर रहें। एक सेकेण्ड में अशरीरी होने का अभ्यास करें, तो जब चाहें तब बाबा से मिल सकते हैं।

मैंने कहा आपने तो दादी को भी ऊपर बुला लिया है। बाबा ने कहा, इसमें बहुत बड़ा राज़ है। बच्चों ने पढ़ाई तो पढ़ी, साकार रूप से भी और अव्यक्त रूप से भी। लेकिन फिर भी बच्चों में वो तीव्रता नहीं आ रही थी, विश्व की आत्माओं को तो सहयोग की आवश्यकता है ही, लेकिन मेरे ब्राह्मण बच्चों को भी सहयोग की आवश्यकता है। चाहते हुए भी जो तीव्रगति चाहिए वो नहीं हो पा रही है। तो अभी डबल रथ के द्वारा ये कार्य तीव्रगति से चलेगा, जिससे बच्चों के अन्दर भी उमंग-उत्साह आ जायेगा। बाबा दोनों रूप से बच्चों को अलौकिक शक्तियां देंगे, जिससे बच्चे सहज रूप से उड़ना सीख जायेंगे।

बाबा ने कहा दादी आपकी भी यही इच्छा है ना, कि बच्चे जब चाहें बाबा से मिलें, डायरेक्शन लें, शक्तियां लें और अपने को सम्पन्न बनायें। तो दादी जी-जी कह रही थी। तो बाबा ने सहज रीति से ये शक्तियां बच्चों को देने

के लिए इस बच्ची को बुलाया है। बाकी बच्चे क्यों, क्या, कैसे की सोच नहीं चलायें। जैसे बाबा को कराना है, वैसे कराता रहेगा। सिर्फ आप बच्चों को अपने को, अपनी दादियों को और बाबा को देखना है। उनको फालो करते हुए आगे बढ़ते रहना है और यही समझना है अभी जो कार्य बाकी है, उसकी जिम्मेवारी बाबा ने हमें दी है।

शिव शक्तियों का पार्ट तो अन्त में चलना ही है। शिव शक्ति पाण्डव सेना मेरा कार्य सम्भाल लेंगे। बाबा के साथ दादी भी शक्तियों की वर्षा करते, डायरेक्शन देती रहेगी। बाबा अपने राइट हैण्ड्स द्वारा सब कार्य कराते रहेंगे। फिर बाबा ने कहा कि भले दादी हॉस्पिटल में थी, पर बच्ची ज्यादा समय मेरे पास ही रहती थी। बाबा की मुख्य बच्चियां बाबा के पास आती रहती हैं, राय करती रहती हैं। इस कार्य को और कैसे तीव्रगति से आगे बढ़ायें, उसकी राय चलती रहती है। मैं समय-समय पर राय देता रहूंगा। सिर्फ बच्चे बाप के आदेश का पालन करें, दादियों को और बाबा को फालो करें, ऐसे स्व उन्नति करते, हम विश्व की आधारमूर्त आत्मायें हैं, ऐसे समझते हुए चलें, निरन्तर योग में हर कर्म करें, हर संकल्प करें तो यह कार्य जल्दी पूरा होगा। ऐसा कहते बाबा ने सभी को बहुत-बहुत यादप्यार दिया और मैं नीचे आ गई। ओम् शान्ति।

20-03-21, रुकमणी बहन

आज सभी की स्नेह भरी याद और भोग लेकर बाबा के दादी के जैसे ही करीब पहुंचती हूँ, बाबा और दादी एक साथ ही पूछते हैं कि सभी ठीक हैं! मैंने कहा, आपको हमसे जास्ती मालूम होगा। दादी कहने लगी सभी की याद और प्यार लेकर पहुंची है। तो बाबा और दादी दोनों ही कहने लगे कि प्यार के रिटर्न में सभी क्या देंगे? यज्ञ की पुरानी बातें बाबा और दादी ने याद दिलाई। बाबा कहने लगे देखो बच्ची, जहाँ आपस में प्यार होता है, प्यार के ऊपर कुर्बानी होती है, प्यार के ऊपर ही न्योछावर होते हैं। शुरू में बाबा के घर में जो भी आये सभी ने बाबा और मम्मा के प्यार में अपने को बलिहार किया। जो बाबा मम्मा कहते थे उस अनुसार चले। पर अभी सभी बाबा के प्यार में तो चलते हैं, पर विशेष दादी के प्यार में सभी पहुंच रहे हैं और सभी की याद वतन में भी पहुंच रही है। फिर बाबा ने सुनाया कि बच्ची बाबा तो विशेष रूप से सब जगह चक्कर लगाते हैं। बाबा ने कहा इस समय भारत में कहीं न कहीं थोड़ी खटपट होती रहती है, चाहे जमीन, चाहे सेन्टर को लेकर। यज्ञ के शुरू में जो भी बच्चे आये, जैसा बाबा ने कहा वैसा मानके चले। कभी बाबा के आगे कोई क्वेश्चन नहीं रखा। इतना सभी वफादार होकर एकमत, एकजुट होकर चले। लेकिन अभी बाबा बच्ची को भी साथ में चक्कर लगाकर दिखायेंगे कि बच्चे किस-किस प्रकार की एक्ट करते हैं।

बाबा ने कहा जिस प्रकार सभी दादियां एकमत, एकजुट होकर, एक प्रेम की डोरी में बंधकर चली। अभी तक ब्राह्मणों में वो प्रेम-रस जुटा नहीं है। जैसे आम रस होता है उसको पीते हैं, उसमें कितनी मिठास होती है, ऐसे ब्राह्मण परिवार में भी प्रेम की मिठास होनी चाहिए, जिसको दुनिया वाले देखकर कहें कि कैसा सुन्दर ईश्वरीय परिवार है। यह बाबा और दादियां देखने चाहते हैं। भले बच्चे पुरुषार्थ तो कर रहे हैं, लेकिन कहाँ-कहाँ कोई बातों में गफलत भी कर लेते हैं। दादियों ने तो अपनी अवस्था सम्पूर्ण बना ली और बाप के समीप पहुंच गई। पर आप बच्चों को भी समय को देखते हुए इतना ही श्रेष्ठ ऊंच पुरुषार्थ करना है। बाबा सुना रहे थे और दादी सिर हिलाते हुए सुन रही थी और कह रही थी कि बाबा आप सभी ब्राह्मण परिवार से यह प्रतिज्ञा जरूर कराओ।

फिर बाबा और दादी के आगे सुन्दर सजी हुई भोग की थाली लेकर जाते हैं, तो बाबा भी बड़े प्यार से दृष्टि डालते हुए दादी को भोग स्वीकार कराते हैं। दादी कहती है इतने प्रकार का भोग इतने दिन तक खाया है, जो एक साल के कोटे से ऊपर हो गया है। बाबा ने कहा तुम तो अभी अशरीरी, सूक्ष्म हो तो जितना स्वीकार कर सकती हो उतना करो, बाबा स्वीकार करायेगा। बाबा को तो कितना भी स्वीकार कराओ वह तो मोटा होने वाला है नहीं।

बच्चों की तो लिमिट होती है, साकार में दादियां भी बहुत सूक्ष्म भोजन करती थी। तो बाबा ने बड़े प्यार से दादी को भोग स्वीकार कराया फिर बाबा और दादी ने सभी ब्राह्मण बच्चों को चाहे देश के चाहे विदेश के, सभी को स्नेह भरी याद दी। बाबा ने कहा विदेश के बच्चे भी अपने समय अनुसार बाबा को दादी को भोग लगा रहे हैं। फिर मैं बाबा का और दादी का यादप्यार लेते हुए नीचे पहुंच गई। ओम् शान्ति

21-03-21 रुकमणी बहन

बाबा के पास वतन में भोग लेकर पहुंची और बाबा को सभी भाई-बहनों की स्नेह भरी, प्यार भरी याद दी। बाबा के बाजू में साथ में दादी बैठी हुई थी, जैसे ही सामने दादी और बाबा ने हमको देखा तो बाबा कहने लगे, बच्ची सभी ब्राह्मण बच्चों के दादी के प्रति संकल्प चल रहे हैं, अभी इतने दिन हो गये। गिनती करना शुरु किया है। इस प्रकार बाबा के बच्चों के श्रेष्ठ संकल्प हैं क्योंकि बाबा को अपने बच्चों के द्वारा कुछ नया ही कार्य कराना है। ऐसे कहते हुए बाबा ने फिर दूसरा दृश्य इमर्ज किया। एक बड़ा नन्दी दूसरा छोटा नन्दी। बाबा ने कहा मन्दिरों में दो नन्दीगण का यादगार चला आ रहा है। बड़े को तो बहुत मोटे रूप से दिखाते हैं। जो छोटा होता है, उसको बहुत ही शोभनिक दिखाते हैं। इसी प्रकार शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा जो कार्य किया वो तो सारे ब्राह्मण परिवार के सामने है, पर इस छोटे नन्दी द्वारा, इस रथ द्वारा भी कितना समय अनेक कर्तव्य कराये, बच्ची सेवार्थ देश विदेश में भी गई। जहाँ भी बच्चे निमन्त्रण देते थे बच्ची पहुंच जाती थी। बाबा ने कहा जिस प्रकार साकार में रहकर दादी सब जगह चक्कर लगाती थी। अभी अव्यक्त रूप में भी चक्कर लगा रही है।

जिस प्रकार ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए, तो ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त रूप देश विदेश की सेवा के निमित्त बना। बाबा के आकारी स्वरूप द्वारा अनेक ब्राह्मण बच्चों का जन्म हुआ। इसी प्रकार इस बच्ची का, दादी का रूप आने वाले समय में बाबा बच्चों के सामने रखेगा। जिन्होंने दादी को नहीं देखा, अव्यक्त पार्ट नहीं देखा है। बाबा इस बच्ची के द्वारा और भी सूक्ष्म सेवायें करायेगा।

फिर मैंने कहा अभी तामिलनाडु जोन बच्चे मिलन मनाने के लिए आये हैं। बाबा ने कहा बाबा अपना कार्य बच्चों को साथ रखते हुए करता रहेगा, और कर भी रहा है। बाबा का रूप दादी के साथ अव्यक्त रूप में दिखाई दे रहा था। जैसे दादी के तन में बाबा आते थे, वैसा ही दिखाई दे रहा था। बाबा ने कहा जो भी अभी स्थापना का कार्य रहा हुआ है, वो कार्य इस बच्ची द्वारा बाबा करायेगा। बच्चे अगर अपनी बुद्धि की लाइन क्लियर रखेंगे तो जिस प्रकार ब्रह्मा बाबा के स्वरूप का दर्शन करते हैं, उसी प्रकार बच्ची के द्वारा अव्यक्त पार्ट का भी अनुभव करेंगे।

बाबा के, दादी के आगे भोग रखा था। सभी की याद के साथ नीलू बहन, तारा बहन की भी याद दी। दादी ने कहा यह तो शुरु से ही निमित्त रथ की सेवा प्रति आई, सेवा का फल तो बाबा देता ही है। वह अनुभव समय प्रति समय प्यार और दुलार के रूप में मिलता रहेगा। फिर दादी ने और बाबा ने सभी ब्राह्मण बच्चों को यादप्यार दिया, वह यादप्यार लेते हुए मैं नीचे आ गई।

22-03-21

आदरणीय दादी गुल्जार जी के निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (वेदान्ती बहन)

आज याद में बैठे-बैठे भोग, हार, फल सब कुछ लेकर जब वतन में पहुंची, तो एक सुन्दर दृश्य देखा। बापदादा और सभी हमारे दादे दादियां जो भी एडवान्स पार्टी में गये हैं, सब एक साथ बैठे हुए थे। तो मैं जैसे ही भोग लेकर पहुंची तो सबको देखकर बहुत खुश हो गई कि आज सबको एक साथ देख रही हूँ। मैंने कहा आज तो मैं गुल्जार दादी जी के निमित्त आप सबके लिए बहुत वैरायटी भोग लेकर आई हूँ। तो सभी मुस्कराये और बाबा ने कहा आओ बच्ची, आज बड़े परिवार के बीच से बापदादा के डायमण्ड हॉल से आई हो! मैंने कहा हाँ बाबा। तो बाबा ने कहा देखो, यहाँ सब डायमण्ड बैठे हैं। गुल्जार दादी ने जो सबको इतना सुख दिया है, तो आज यहाँ पिकनिक और मीटिंग रखी है। बापदादा के पास आपकी दादी के लिए आगे का जो प्लान है, वो अभी डिजाइन हो रहा है। फिर गुल्जार दादी ने कहा मेरी बाबा को एक रिक्वेस्ट है कि काफी समय से मुझे डायमण्ड हॉल में यज्ञ वत्सों को, निमित्त को बड़े परिवार को दृष्टि देने का मौका नहीं मिला है। मेरी दिल है मैं सबसे मिलकर आऊं। तो बाबा ने कहा तुम्हारी जो दिल है वो बापदादा पूरी करेगा, पर तुम अकेले नहीं जायेंगी, हम भी साथ में चलते हैं। फिर मुझे मालूम नहीं बापदादा और दादी ने क्या प्लैन किया और क्या हुआ! फिर जो भी सीन बापदादा ने, दादी ने दिखाया वो आप सबने अनुभव किया होगा। (कुछ समय के लिए वेदान्ती बहन में दादी जी की पधरामनी हुई और नीलू बहन का हाथ पकड़कर चलते हुए सभी को दृष्टि दी, सबसे मिलन मनाया और कुछ समय के बाद वतन में वापस चली गई)

फिर कुछ देर के बाद गुल्जार दादी और बापदादा को देखा, तो मैं थोड़ा शान्त हो गई। बापदादा ने कहा बच्ची, बापदादा ने गुल्जार बच्ची की इच्छा पूरी कर ली। अभी बताओ आगे क्या करना है! तो मैंने कहा बाबा भोग स्वीकार करो और अगर आपकी दिल है तो हमें कुछ कहो। तो बाबा ने कहा अभी क्या है, कोई कुछ बोलता है, कोई नहीं बोलता है लेकिन अन्दर परसेन्टेज़-वाइज़ सबमें चल रहा है कि अब दादियां हमारी जा रही हैं तो यज्ञ को कौन सम्भालेगा! तो इस बात की मीटिंग चल रही है। ब्रह्मा बाप ने भी जब साकार वतन छोड़ा तो बच्चों के अन्दर यही था कि अब क्या होगा! लेकिन बच्चों ने देखा बहुत सुन्दर पार्ट चला।

अभी गुल्जार दादी अपने आगे के प्लान में गई तो फिर यही प्रश्न उठा लेकिन यज्ञ तो बापदादा का है, तो बच्चों को बता दो कि प्रश्नों को बन्द करो, फुलस्टॉप में रहो। बापदादा के पास प्लान है, बापदादा गया नहीं है, खाली दादियों को ऊपर बुलाया है, वे भी अपना पार्ट बजा रही हैं। अब तक 85 वर्षों में जो चला है उससे बहुत बढ़िया चलने वाला है। सिर्फ बच्चे छोटे या बड़े हो, कोई भी सेवा के निमित्त हो, **अभी पोजीशन को भूलो तो अपोजीशन बन्द हो जायेगा।** सेवाधारी बनकर सेवा करो, तो अपोजीशन अपने आप खत्म हो जायेगा। बाबा का यज्ञ अभी बहुत फास्ट विश्व तक पहुंचेगा। हमारे जो भी यज्ञ के वत्स ऊपर जा रहे हैं, आगे की सेवा कर रहे हैं। धीरे-धीरे आप भी जायेंगे। बाबा सारी कारोबार ऊपर से कन्ट्रोल कर रहा है, यह मीटिंग चल रही है। सभी बच्चों को बाबा कहना चाहते हैं कि निश्चिन्त हो जाओ।

उसके बाद बाबा ने सबको भोग दिखाया और स्वीकार कराया। सभी दादे दादियां वहाँ पर मौजूद थे। बापदादा तो गुल्जार दादी को देख बहुत खुश हो रहे थे, लेकिन हमारी दादी जानकी और प्रकाशमणी दादी गुल्जार दादी का हाथ पकड़कर खड़े थे, वह एक दूसरे को दृष्टि दे रहे थे, हमें भी दृष्टि दे रहे थे और खुश हो रहे थे कि हम मिलकर बापदादा के यज्ञ के कार्य को सुन्दर रीति से पूरा करेंगे।

फिर बाबा ने मेरे को भी भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा बापदादा और दादी तीनों ने डायमण्ड हॉल में आकर बहुत ही पावरफुल वरदान दिया है। **अभी हर बात में एकरस रहकर आगे बढ़ो, हर बात में एकरस रहकर आगे बढ़ो।** बाबा ने कहा इसी में खुद की, सेवा की, यज्ञ की और सब बातों की सफलता समाई हुई है। ऐसे कहते बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे और दृष्टि देते-देते एक बहुत सुन्दर कमल का फूल दिया और कहा यह फूल सबके लिए है। सबकुछ करते हुए कमल फूल समान स्थिति से आगे बढ़ते चलो। उसी दृश्य के साथ मैं उस वतन से इस वतन में आ गई। ओम् शान्ति।